संपादकीय

भारतीय आधुनिक शिक्षा की अकादमिक संपादकीय समिति की ओर से सभी पाठकों को नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ! यह नववर्ष 2023 हमारे लिए नई ऊर्जा, उत्साह एवं उमंग लेकर आया है। इस उमंग एवं उत्साह के बीच व्यक्ति को जीवन में कई परीक्षाओं से गुज़रते हुए आगे बढ़ना होता है। इसमें विशेषकर शिक्षकों, माता-पिता एवं विद्यार्थियों को इस वर्ष आयोजित होने वाली वार्षिक परीक्षाओं की चिंता होने लगी है, क्योंकि इस वर्ष बोर्ड की एवं अन्य प्रतियोगी परीक्षाएँ अपने नियत समय पर ही होंगी, जिन्हें कोविड-19 महामारी के कारण विलंब से आयोजित किया जा रहा था। इन्हीं परीक्षा संबंधित तनावों से विद्यार्थियों को नई राह दिखाने के लिए 27 जनवरी, 2023 को माननीय प्रधानमंत्री द्वारा 'परीक्षा पे चर्चा 2023' (छठा संस्करण) पर विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं अभिभावकों से संवाद किया गया। इसमें उन्होंने बताया कि गैजेट्स का उपयोग विवेकपूर्ण तरीके से करना, परीक्षा के समय शॉर्टकट न अपनाना, अकसर सामान्य लोग असामान्य काम करते हैं, आलोचना और अपेक्षाओं से निपटना तथा हमारी भाषाई विविधता एवं विरासत पर गर्व करते हुए एक बेहतर इंसान बनने का मार्गदर्शन दिया।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 आजीवन सीखने के लिए हमारी सांस्कृतिक विरासत एवं प्राचीन ज्ञान परंपरा से जोड़ने का प्रबल संदेश देती है, क्योंकि विद्यालय, महाविद्यालय और विश्वविद्यालय ज्ञान-सृजन के केंद्र होते हैं। यह सृजन समाज की संस्कृति के मध्य होता है और उस संस्कृति को समृद्ध भी करता है। आज जब वर्तमान काल को 'ज्ञान-युग' के रूप में जाना जा रहा है, तब भारतीय ज्ञान परंपरा और ज्ञान की संस्कृति का प्रश्न विशेष रूप से विचारणीय है। लेख 'भारतीय ज्ञान परंपरा और ज्ञान की संस्कृति' इसी विषय को विस्तृत रूप में समझाने का प्रयास करता है।

वहीं लेख 'विद्यालयी शिक्षा पर महात्मा गांधी के विचारों और *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में समानता' में मातृभाषा से शिक्षा, शिक्षा के माध्यम से चरित्र का विकास, शिक्षा के माध्यम से बच्चे का सर्वांगीण विकास, व्यावसायिक शिक्षा, शिक्षा के महत्वपूर्ण पहलुओं के रूप में खेल और व्यायाम शिक्षा, मूल्य शिक्षा, कौशल विकास, शिक्षा से आत्मनिर्भरता आदि जैसे विद्यालयी शिक्षा के मुद्दों पर महात्मा गांधी के विचारों और *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में दी गई अनुशंसाओं के बीच समानता को प्रस्तुत किया गया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षा को अनुभव से जोड़ते हुए निरंतर सीखने के लिए प्रेरित करती है। इसी दृष्टिकोण को 'सामाजिक विज्ञान की अवधारणाओं को सहजता से सीखना-सिखाना—एक अनुभव' नामक लेख में विद्यार्थियों में सामाजिक विज्ञान की अमूर्त अवधारणाओं की समझ उन्हीं के प्रयासों से कैसे सिखाई जाए, पर आधारित यह लेख अनुभव-आधारित अधिगम को प्रस्तुत करता है। इसमें शिक्षक सुगमकर्ता के रूप में कक्षा में सीखने का अनुकूल वातावरण निर्मित कर तथा विद्यार्थियों की सहभागिता को प्रोत्साहित करते हुए अमूर्त अवधारणाओं को सिखाने का नवाचार करता है।

विद्यालय में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को सुगम बनाने के लिए शिक्षक निरंतर प्रयास करते हैं। लेकिन इन प्रयासों के दौरान उन्हें सार्थक अकादमिक सहायता की आवश्यकता महसूस होती है। इस सहायता की पूर्ति के लिए दिल्ली सरकार द्वारा विद्यालयी शिक्षा में मेंटर शिक्षकों की नियुक्ति की गई है। इसी पर आधारित लेख 'दिल्ली की विद्यालयी शिक्षा में मेंटरशिप कार्यक्रम— एक अनुभव' में दिल्ली शिक्षा विभाग के एक मेंटर शिक्षक के अनुभवों को साझा किया गया है, जो विद्यालय स्तर पर शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में, विद्यार्थियों में अपेक्षित अधिगम प्रतिफल प्राप्त करने तथा विद्यालय एवं समुदाय को जोड़ने व विभिन्न शैक्षिक संस्थाओं में समन्वयन करने में एक मेंटर की भूमिका पर आधारित है।

वहीं, विद्यार्थियों में वैज्ञानिक अभिवृत्ति एवं रचनात्मकता विकसित करने के लिए शिक्षण-अधिगम की विविध विधियों एवं मॉडलों को अपनाना आवश्यक है। ऐसा ही एक शोध-पत्र 'सृजनात्मक समस्या-समाधान अनुदेशन मॉडल द्वारा विद्यार्थियों में वैज्ञानिक सृजनात्मकता का विकास' पर किए गए शोध अध्ययन पर आधारित है। इस शोध अध्ययन के निष्कर्ष के रूप में प्रयोगात्मक समूह व नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों में वैज्ञानिक सृजनात्मकता से संबंधित पश्च परीक्षण के मध्यमानों में सार्थक अंतर पाया गया। साथ ही, यह मॉडल विद्यार्थियों में वैज्ञानिक सृजनात्मकता विकसित करने में प्रभावी रहा। इससे यह सिद्ध होता है कि शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं में विद्यार्थी-केंद्रित गतिविधियों का समावेश करने से विद्यार्थियों में वैज्ञानिक सृजनात्मकता का विकास किया जा सकता है।

विद्यालयी स्तर पर विद्यार्थियों की गणितीय उपलब्धि के विविध आयामों पर कई शोध अध्ययन हुए हैं। यह शोध अध्ययन बताते हैं कि प्रारंभिक स्तर पर विद्यार्थियों के गणितीय विश्वास उनकी गणित विषय में उपलब्धि को प्रभावित करते हैं। इसी पर आधारित कक्षा 8 के विद्यार्थियों के गणितीय विश्वास को समझने के लिए गणितीय विश्वास पैमाना के निर्माण एवं उसके मानकीकरण की प्रक्रिया को शोध-पत्र 'गणितीय विश्वास पैमाना— निर्माण एवं मानकीकरण' में प्रस्तुत किया गया है।

शोध-पत्र 'विद्यार्थियों के पर्यावरणीय विचारों पर उनकी सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का प्रभाव' में नगरीय निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों और ग्रामीण सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के जल विषयक विचारों को प्रस्तुत किया गया है। इस शोध-पत्र में दोनों संदर्भों के विद्यार्थियों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमिगत भिन्नताएँ उनके विचारों को कैसे प्रभावित करती हैं, को बताया गया है।

नवाचारी शिक्षण-अधिगम के प्रयासों के बीच, अभी भी विद्यालयों को व्यवहारवादी सोच एवं प्रयोगों ने जकड़ रखा है। इसी जड़ता को 'संस्थागत ज्ञान, शिक्षणशास्त्र और विद्यालयों में व्यवहारवादी जड़ता' नामक लेख भारतीय स्कूलों में मौजूद व्यावहारवादी शिक्षणशास्त्रीय परिपाटियों पर एक टिप्पणी प्रस्तुत करता है। इसमें विद्यालयों का अवलोकन कर प्राप्त किए गए अनुभवों के आधार पर यह समझाने का प्रयास किया गया है कि विद्यालयों में व्याप्त व्यवहारवादी जड़ता, शिक्षणशास्त्रीय परिपाटियों, शिक्षाई नवाचारों और संस्थागत ज्ञान में कैसा संबंध है। साथ ही, यह लेख विद्यालयों में

नवाचारों के बजाय व्यवहारवादी जड़ता को भी प्रस्तुत करता है।

भारत सामाजिक एवं सांस्कृतिक विविधता से परिपूर्ण है। फिर भी व्यक्ति को सामाजिक रूप से कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जिसमें लैंगिक असमानता बहुत रूढ़िवादी एवं अप्रासंगिक मुद्दा है। इसी मुद्दे पर लेख 'विद्यालयी शिक्षा में सामाजिक एवं लैंगिक असमानता को दूर करने की पहलें', विद्यालयी शिक्षा में मौजूद लैंगिक असमानता के विभिन्न आयामों को समझाने का प्रयास करता हैं। इसमें समग्र शिक्षा के तहत विद्यालयी शिक्षा में लैंगिक असमानता को कम करने पर किए जा रहे प्रावधानों और प्रयासों पर चर्चा की गई है। साथ ही, समग्र शिक्षा के अंतर्गत की गई पहलों को लागू करने तथा बालिकाओं के विद्यालयी शिक्षा में ठहराव पर सुझाव भी दिए गए हैं।

विद्यार्थियों में अपने जीवन के लिए उपयोगी शिक्षा की शाखा कौन-सी होगी। इसी अंतर्द्वंद पर आधारित एक शोध-पत्र दिया गया है। शोध-पत्र 'पूर्व-स्नातक मुस्लिम विद्यार्थियों के शिक्षा विषयात्मक चयन संबंधी कारक' में पूर्व-स्नातक मुस्लिम विद्यार्थियों की पारिवारिक एवं संस्थागत पृष्ठभूमि के आधार पर तकनीकी एवं गैर-तकनीकी शिक्षा में नामांकन तथा इसी पृष्ठभूमि के परिप्रेक्ष्य में उनके द्वारा शिक्षा विषयात्मक चयन संबंधी कारकों को प्रस्तुत किया गया है। साथ ही, यह भी बताया गया है कि इन विद्यार्थियों के आवासीय स्थान, परिवार की आर्थिक परिस्थितियाँ, विद्यालयी परिवेश और व्यक्तिगत पसंद का शिक्षा विषयात्मक चयन पर प्रभावी पड़ता है।

व्यक्ति को जीवन में अपने कौशलों एवं क्षमताओं को पहचानने एवं उसका उपयोग अपने जीवन निर्वाह के साधन के रूप में करते हुए अपने आप को अपडेट रखना बहुत ज़रूरी है। इसमें उद्यमिता शिक्षा का विशेष स्थान है। उद्यमिता विद्यार्थियों के लिए ज्ञान, योग्यता, नवीन विचारों, जोखिम, रचनात्मकता और कौशल प्राप्त करने का एक महत्वपूर्ण साधन है। लेख 'विद्यालयी शिक्षा में उद्यमिता शिक्षा की शुरुआत क्यों?' उद्यमिता, उद्यमिता शिक्षा व व्यावसायिक शिक्षा की आवश्यकता और उससे संबंधित *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में जुड़े विभिन्न पहलुओं तथा उद्यमिता शिक्षा की शुरुआत शिक्षा के किस स्तर से की जाए और क्यों? और इसे बढ़ावा देने के लिए शिक्षक, विद्यालय प्रशासन, समाज एवं सरकार मिलकर कैसे विद्यार्थियों की मदद कर सकते हैं, पर प्रकाश डाला गया है।

इस अंक के अंत में एक पुस्तक समीक्षा दी गई है। जिसका शीर्षक 'मननशील शिक्षण— चिंतन-मनन एवं अभ्यास के अनुभवों से समर्थ अध्यापक' है। इस पुस्तक समीक्षा की पृष्ठभूमि में पुस्तक *रिफ़्लेक्टिव टीचिंग— ए हैंडबुक टूवर्ड्स प्रीपेयरिंग ए रिफ़्लेक्टिव टीचर* है, जिसे राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रक्षिक्षण परिषद, नई दिल्ली द्वारा जुलाई 2021 में प्रकाशित में किया गया था। यह हैंडबुक विद्यार्थी-शिक्षकों, शिक्षकों, शिक्षक-प्रशिक्षकों एवं शोधार्थियों को मननशील शिक्षण के विविध पहलुओं एवं अभ्यास से परिचित कराती है। इस हैंडबुक में अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में आए

सैद्धांतिक और नीतिगत बदलावों का उल्लेख करते हुए अध्यापन पेशे के प्रमुख बदलावों को रेखांकित करते हुए बताया गया है कि आज के अध्यापक का मननशील होना आवश्यक है।

आप सभी की प्रतिक्रियाओं की हमें सदैव प्रतीक्षा रहती है। आप हमें लिखें कि यह अंक आपको कैसा लगा। साथ ही, आशा करते हैं कि आप अपने मौलिक तथा प्रभावी लेख, शोध पत्र, आलोचनात्मक समीक्षाएँ, श्रेष्ठ अभ्यास, पुस्तक समीक्षाएँ, नवाचार एवं प्रयोग, क्षेत्र अनुभव आदि प्रकाशन हेतु 'लेखकों के लिए दिशा-निदेर्शों में दिए गए पते पर भेजेंगे।

अकादमिक संपादकीय समिति